NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX-A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No:2581-4230
VOLUME 6, ISSUE 8, Aug. -2020

Dr. Lajvanti
Associate Professor of Hindi
Govt. College Kosli, Haryana

हरियाणा की हिन्दी ग़ज़लों की भाषा और भाषाविज्ञान

Abstract

हरियाणा की हिन्दी ग़ज़लों की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है। इन ग़ज़लों में जिस खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है वह समस्त साहित्यिक गुणों से युक्त एक समर्थ काव्य भाषा है। उत्तम साहित्य की रचना में जिन गुणों की आवश्यकता होती है वे सब इन ग़ज़लों की भाषा में सजह ही मिल जाएंगें। यह ठीक है कि हरियाणा की हिन्दी ग़ज़लों की भाषा छायावादी कवियों जयशंकर प्रसाद और निराला आदि की भाषा जितनी परिष्कृत और शुद्ध हिन्दी भाषा नहीं है। क्योंकि ग़ज़ल विदेशी जमीन से भारत में आई हुई एक काव्य–विधा है। इसलिए विदेशी छन्द के साथ–साथ यह अनेक विदेशी शब्द भी अपने में संजोए हुए है। इन ग़ज़लों की भाषा में विदेशी शब्दावली विशेष रूप से अरबी–फ़ारसी की शब्दावली भी देखने को मिलती है। कही–कही अंग्रेजी भाषा के शब्द भी मिल जाते हैं।

Introduction

महान ग़ज़लकार दुष्यन्त कुमार ने अपने ग़ज़ल–संग्रह 'साये में धूप' की भूमिका में ग़ज़ल की भाषा के बारे में लिखा है – ''हिन्दी और उर्दू अपने–अपने सिंहासन से उतरकर जब आम आदमी के पास आती हैं तो उनमें फ़र्क कर पाना बड़ा मुश्किल होता है। मेरी कोशिश और नीयत यह रही है कि इन दोनों भाषाओं को ज्यादा करीब ला सकूं । इसलिए ये ग़ज़लें उस

भाषा में कही गई हैं, जिसे मैं बोलता हूँ।''

यह वक्तव्य हरियाणा की हिन्दी ग़ज़लों पर खरा उतरता है। ये ग़ज़लें आम भारतीयों की बोलचाल की भाषा में लिखी हुई है। व्यक्ति बोलते समय हिन्दी और उर्दू शब्दों में भेद नहीं करता, वैसी ही हरियाणा के इन ग़ज़लकारों ने बोलचाल की भाषा में आए हुए सभी शब्दों का प्रयोग किया है इन ग़ज़लकारों के पास संस्कृत के तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों का अक्षय भण्डार है। जिस कारण से इन्हें किसी भी भाव को व्यक्त करने में कोई समस्या नहीं आई है। इन्होंने अधिकतर संकेतिक भाषा का प्रयोग किया है और इनकी भाषा सयंत और सहज रही है।

हरियाणा की हिन्दी ग़ज़लों भाषा–वैज्ञानिक अध्ययन का अभिप्राय इन ग़ज़लों की भाषा का वैज्ञानिक रूप से मूल्यांकन करना है। यह अध्ययन भाषाविज्ञान की वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है। वर्णनात्मक पद्धति में भाषा के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन ध्वनि, पद, वाक्य एवं अर्थ आदि विषयों पर विश्लेषण–विवेचन किया जाता है।

ध्वनि–विज्ञान के अन्तर्गत सभी देशी एवं विदेशी ध्वनियों; पद–विज्ञान के अन्तर्गत तत्सम, तद्भव, देशज–विदेशी, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, अत्यय आदि पदों, वाक्य–विज्ञान के अन्तर्गत सरल, संयुक्त, मिश्र आदि वाक्यों; तथा अर्थ विज्ञान के अन्तर्गत अर्थ–विस्तार, अर्थ–संकोच, अर्थादेश, अर्थोत्कर्ष, अर्थापकर्ष, मुहावरे एवं लोकोक्तियों आदि विषयों का उदाहरण सहित अध्ययन किया जाएगा।

वर्णनात्मक पद्धति में भाषा के सीमित काल का अध्ययन ही होता है। फिर भी इस अध्ययन का महत्त्व प्राचीन काल से रहा है। इस प्रकार के अध्ययन से भाषा के साधु–असाधु रूपों पर चिन्तन करते हुए ध्वनि, पद, वाक्य आदि इकाइयों रूपी शरीरांग के साथ उसकी अर्थ रूपी आत्मा पर भी विचार किया जाता है।

भाषा का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना भाषाविज्ञान कहलता है। इसका अध्ययन सन् 1786 में सर विलियम जोंस के संस्कृत, लैटिन और ग्रीक आदि भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से प्रारम्भ हुआ इसलिए इसे ब्वउचंतंजपअम ळतंउउंत नाम दिया गया।। परन्तु अब इसका नाम Linguistics या भाषाविज्ञान चल पड़ा है। इसमें भाषा के सभी अंगों ध्वनि, पद, वाक्य और अर्थ आदि का वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण–विवेचन किया जाता है।

भाषाविज्ञान का क्षेत्र बहुत विशाल है।। यह मानव के वागंगों से उच्चरित सभी भाषाओं और बोलियों का अध्ययन करता है। यह जंगली बोलियों और ग्रामीण लोगों की बोलियों का अध्ययन भी करता है। परन्तु मानव वागंगों के अतिरिक्त पशु–पक्षियों की बोलियों का अध्ययन इसमें नहीं किया जाता।

भाषाविज्ञान द्वारा भाषा को खण्ड–खण्ड करके विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है। इसलिए यह विज्ञान है, परन्तु इसके निर्णय भौतिक विज्ञान के बराबर सार्वभौमिक व स्थायी नहीं होते। भाषाविज्ञान की दृष्टि वैज्ञानिक है तथा अपने सूक्ष्म अध्ययन के कारण यह एक विज्ञान है।

भाषाविज्ञान हमारी भाषा संबंधी जिज्ञासाओं की पूर्ति करता है। इसके साथ–साथ यह भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान करता है, भाषा की प्रकृत का ज्ञान करता है, प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का ज्ञान कराता है, चिकित्सा मे उपयोगी तथा व्याकरण का पथ–प्रदर्शक है तथा विश्वबंधुत्व की भावना का विकास भी करता हैं।

भाषा विज्ञान व्याकरण के अंगों पर आधारित वर्णनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है तथा व्याकरण भी भाषा–विज्ञान का एक अंग–मात्र है। भाषाविज्ञान और साहित्य एक–दूसरे पर आधारित हैं। साहित्य भाषाविज्ञान को अध्ययन के

लिए सामग्री प्रदान करता है तो भाषाविज्ञान साहित्य के पुराने रूपों के साथ–साथ ग्रामीण एवं जंगली बोलियों का अध्ययन भी करता है।

भाषा–वैज्ञानिक अध्ययन के कई प्रकार हो सकते हैं। जब यह भाषा के ध्वनि, पद, वाक्य एवं अर्थ आदि भागों का एक ही कालखण्ड में अध्ययन करते हैं तो यह वर्णनात्मक पद्धति कहलाती है। जब किसी भाषा का कालक्रमिक रूप से विकास का अध्ययन किया जाता है तो यह ऐतिहासिक पद्धति कहलाती है। जब दो भाषाओं का ध्वनि, पद, वाक्य जाता है तो यह तुलनात्मक पद्धति कहलाती है तथा जब प्रयोगशाला में यन्त्रों की सहायता से ध्वनियों का अध्ययन किया जाता है तो वह प्रायोगिक पद्धति कहलाती है।

हरियाणा की हिन्दी ग़ज़लों की भाषा साहित्यिक भाषा के साथ–साथ आम आदमी की बोलचाल की भाषा हैं। यह अनेक समस्याओं को संकेतिक रूप में प्रस्ततु करती है। इन ग़ज़लों में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दावली का प्रचुर भण्डार है। ग़ज़ल की भाषा सामान्य भाषा से अलग विलक्षण होती है। ऐसी स्थिति में इन ग़ज़लों के भाषा–वैज्ञानिक अध्ययन का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। अब इन ग़ज़लों की ध्वनियों, पदों, वाक्यों और अर्थ आदि की दृष्टि से अध्ययन करना समीचीन प्रतीत होता है।

भाषाविज्ञान और साहित्य का अन्योन्याश्रित संबंध है। साहित्य भाषाविज्ञान के लिए सामग्री उपलब्ध कराता है। भाषाविज्ञान के दो रूप तुलनात्मक भाषाविज्ञान व ऐतिहासिक भाषाविज्ञान तो पूरी तरह से साहित्य पर ही निर्भर हैं। साहित्य ही भाषा के पुराने नमूने उपलब्ध कराता है, जिसके आधार पर भाषाविज्ञान ऐतिहासिक अध्ययन करता है। संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश आदि मृतप्रायः भाषाओं का भाषावैज्ञानिक अध्ययन साहित्य के कारण ही संभव है।

जहॉ साहित्य भाषाविज्ञान के लिए सामग्री उपलब्ध कराता है वहीं भाषाविज्ञान भी प्राचीन साहित्य सामग्री का पाठालोचन करने में उपयोगी

भूमिका निभाता है। भाषाविज्ञान साहित्य का अर्थनिर्णय करने में भी सहायक है। भाषाविज्ञान के कारण ही पता लग सका है कि संस्कृत, लैटिन और ग्रीक आदि भाषाओं का मूल स्रोत एक ही रहा होगा।

इतना होते हुए भी भाषाविज्ञान का क्षेत्र साहित्य से बहुत विशाल है। भाषाविज्ञान अनपढ़ व गंवारू बोलियों को भी बहुत महत्त्व देता है। यह जंगली बोलियों का अध्ययन भी वैसे ही करता है, जैसे किसी साहित्यिक भाषा का परप्तु साहित्य में केवल परिनिष्ठित भाषा की ही प्रधानता होती है। साहित्य बोलियों को महत्त्व नहीं देता तथा केवल शिष्ट भाषा का प्राधान्य ही इसमें रहता है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

(1) अम्बा प्रसाद सुमन, भाषाविज्ञान सिद्धांत और प्रयोग, सस्ता साहित्य भण्डार, दिल्ली, संस्करण–1982

(2) अयोध्या प्रसाद गोयलीय, शेर–ओ–शायरी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1999

(3) अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध", बोलचाल, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस, द्वितीय संस्करण–संवत् 2011

(4) डॉ. अशोक के.शाह 'प्रतीक', हिन्दी भाषा और भाषाविज्ञान, अमर प्रकाशन, मथुरा, प्रथम संस्करण–2008

(5) उदयनारायण तिवारी, हिन्दी भाषा का उद्‌गम और विकास, भारतीय भण्डार, संस्करण–संवत् 2012

(6) उमेशचन्द्र शुक्ल, हिन्दी व्याकरण, वाणी, प्रकाशन, दिल्ली,

संस्करण–2000

(7) कपिल देव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–1991

(8) कमलकांत मिश्र, अर्थविज्ञान, नाग प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–1988

(9) कामता प्रसाद गुरू, हिन्दी व्याकरण, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, छठा संस्करण–संवत् 2012

(10) किशोरीदास वाजपेयी, हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संस्करण–संवत् 2012